प्रसार पुस्तिका संख्याः- DEE/2021/32

सूकरों की बीमारियों, पहचान एवं बचाव

बिहार पशु विज्ञान विश्वविद्यालय
BIHAR ANIMAL SCIENCES UNIVERSITY

प्रसार शिक्षा निदेशालय
बिहार पशु विज्ञान विश्वविद्यालय, पटना-14

सूकरों की बीमारियों, पहचान एवं बचाव

सूकर एक सर्वभक्षी जानवर है लेकिन इसका पाचन तंत्र हल्का होने के कारण ये मोटे रेशेदार खाने को अच्छी तरह पचा नहीं सकते। इसका खाना हम इन्सानों से काफी मिलता जुलता है। सूकर पालन के अत्यधिक लाभ पाने के लिए इनके उचित आहार के साथ–साथ इनकी बीमारियों की पहचान, बचाव एवं उपचार की जानकारी होना आवश्यक है।

सूकर के प्रमुख रोगः–

पिगलेट एनीमिया, पिगलेट इन्टेराइटिस, स्वाइन–एरीसीपेलस, स्वाइन–फीवर, खुरपका मुंहपका, फुटरॉट, गलाघोंटू, तपेदिक तिल्सी रोग आदि प्रमुख रोग है। इनके अलावे, कृमि एवं चर्म रोग भी प्रमुख रूपसे हुआ करते हैं।

बीमारी से बचाव हेतु टीकेः–

कुछ संक्रामक बीमारियों से बचाव हेतु टीकाकरण अवश्यक है। इससे रोगों को होने की सम्भावना कम हो जाती है।

1) खुरहा रोग से बचाव हेतु टीकाकरण 3 महीने के उम्र में पहली बार टीका लगायें फिर प्रति वर्ष दें।

2) स्वाइन फीफर वैक्सीन 1 एम.एल. चमड़ी के नीचे प्रत्येक बच्चे को माँ का दूध छुड़ाने के समय दें फिर 1 वर्ष बाद में दें।

बीमारियों से बचाव :–

सावधानी बरतने पर सूकरों को होने वाली अधिकांश बीमारियों की रोकथाम की जा सकती है इसलिए हमेशा ध्यान रखें कि सूकर बीमार न पड़े। कुछ नियमों का पालन करने पर बचाव में मदद मिल सकेगी।

जैसेः–

- बाड़े में जरूरत से ज्यादा सूकर न रखें। बाड़े को साफ सुथरा एवं सूखा रखें।

- खाने पीने का बर्त्तन साफ रखें, साफ पानी पिलावे।
- ज्यादा गर्मी एवं ठंडा से बचाव करें।
- बीमार सूकरों को मल एवं संसर्ग में आए घासफूस सावधानी के साथ फेकें।
- छूत के रोग से मरे पशु पर एक परत चून डालकर गढढ़ा में दफनाएं।
- दीवार पर डीडीटी युक्त चूने से सफेदी करें।
- बीमार सूकर को अलग रखें एवं इलाज करें।
- नियमित रूप से टीका करण करवाएं।

पिगलेट इन्टेराइटिस रोग :–

सूकर के छोटे बच्चों में यह बीमारी सामान्यतया देखी जाती है। इस रोग के मुख्य लक्षण हल्का बुखार के साथ दस्त जो बाद में खूनी दस्त में बदल जाता है। सही समय पर इलाज न होने से मृत्यु हो जाती है।

इसके उपचार हेतू अनाज खिलाना बन्द कर दें तथा हल्का खाना दें। सफाई पर ध्यान दें। पशु चिकित्सक की सलाह से इलाज शीघ्र करावें।

स्वाइन फीवर रोग :–

यह एक प्रमुख संक्रामक रोग है, इसे हॉग कोलेरा के नाम से भी जाना जाता है। सूकरों में काफी तेज बुखार होना, कान के बाहर, भीतर एवं पेट पर बैंगनी रंग के धब्बे पड़ जाना, सॉस में कठिनाई, खांसी इस रोग के खास लक्षण है। गर्भवती सूकरी को गर्भपात हो जाता है। स्वस्थ सूकरों को प्रतिरोधक टीका लगाये। घर की सफाई करें, फिनायल का छिड़काव करें।

सूकरों में फैलने वाला यह एक संक्रामक रोग है इसमें बुखार होना, चमड़े पर चकत्ता पड़ना मुख्य लक्षण है। सभी उम्र के सूकरों में यह रोग होता है। लाल रंग के धब्बे आमतौर पर गला, कान, नाक पर देखे जाते है। इसके साथ प्यास लगना, उल्टी, आँखों से पानी गिरना आदि लक्षण देखे जाते है। इसके इलाज हेतु पेनसिलीन की सूई समय पर दें।

खूरपका मूंहपका रोग :–

यह एक विषाणुजनीत संक्रामक बीमारी है जो संपर्क द्वारा एक पशु से दूसरों में फैलता है। बीमार पशु में तेज बुखार होता है एवं खुर तथा मुँह में छाले पड़ जाते है, एक साथ बहुत पशुओं का बीमार होना इस रोग के खास लक्षण हैं। कभी कभी खुर सड़ जाता हैं घाव जल्द ठीक नहीं होता और समय पर उपचार न मिलने पर पशु की मृत्यु भी हो सकती है। बचाव हेतु टीका दिला दें, बीमार पशु की सेवा, इलाज एवं सफाई पर ध्यान दें।

वाह्यपरजीवी के कारण चर्म रोग, खुजली :–

समय–समय पर सूकर के शरीर पर कीट नाशक दवा का छिड़काव कराते रहें। मालाथिओन 0.5 प्रतिशत, आसनटोल 0.2 प्रतिशत, सुमिथिओन 0.5 प्रतिशत, डेल्टामेथरीन 0. 2 प्रतिशत छिड़काव के लिए उत्तम दवा मानी गई है। छिड़काव के बाद फर्स, नाद आदि साफ करके सूकरों को खाना दें। चारा, अनाज, दाना के बोरे के आसपास दवा न छिड़के।

कृमि से बचाव :–

हर वर्ष दो बार बाड़े के सभी सूकर–सूकरियों को कृमि मारने वाली दवा दें। काफी दिनों तक एक ही दवा प्रयोग में न लावें दवा बदलते रहें। एल–बेण्डाजोल 5 मि0ग्रा0 प्रतिकिलों शरीर के भार के अनुपात में फेन्वेन्डाजोल, मिवेन्डाजोल तथा लेभामिसोल शरीर भार के अनुसार दें।

आलेख एवं प्रस्तुतिकरण:- पल्लव शेखर, अनिल कुमार एवं विवेक कुमार सिंह

विशेष जानकारी के लिए सम्पर्क करें:-

निदेशक,प्रसार शिक्षा

बिहार पशु विज्ञान विश्वविद्यालय,पटना–14

Email: deebasupatna@gmail.com (Official), dee-basu-bih@gov.in

Mob.: +91 94306 02962,+91 80847 79374

First Print: 7992457574/ March 2021 Printed Under - SC -PLAN